खंड: 1, अंक: 02 अक्टूबर 2022 DELHIN28953

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

प्रवासी भारतीय एवं वैश्विक राजनीतिः सरोकार एवं संभावनाएं

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

दिल्ली विश्वविद्यालय

मुख्य संपादक

प्रो सुनील कुमार चौधरी

संपादकीय मण्डल

डॉ रमेश भारद्वाज
डॉ संध्या वर्मा
डॉ महेश कौशिक

डॉ अभिषेक नाथ
डॉ आशीष कुमार शुक्ल
राम किशोर

©सीजीएस 2022

रूपांकन: काजल

संश्लेषण

प्रवासी भारतीय एवं वैश्विक राजनीतिः सरोकार एवं संभावनाएं

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. डायस्पोरा की संकल्पना और वैश्विक जगत में 'वसुधैव कुटुम्बकम' का प्रसार
   – निशांत यादव 1–7
2. प्रवासी भारतीयः बढ़ती संख्या एवं बढ़ती भूमिका – सृष्टि 8–10
3. प्रवासी भारतीय एवं वैश्विक राजनीति : सरोकार एवं सभावनाएं
   – सर्विष्ठा जाट 11–15
4. वर्तमान में भारतीय प्रवासियों की स्थिति – नीलम 16–18
5. वैश्विक मंच पर प्रवासी भारतीयों का योगदानः एक महाशक्ति के रूप में भारत
   –दृष्टि साह 19–22

सम्पादकीय

वर्ष 2018 से हिन्दी प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी मासिक पत्रिका को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए हमें एक बार पुनः हर्ष एवं उल्लास का अनुभव हो रहा है। अपनी विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों के माध्यम से वैश्विक अध्ययन केंद्र अकादमिक जगत से संबद्ध समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ एक अटूट संबंध बनाए रखने में सक्रियता व सराहनियता के साथ संकल्पित है। निरंतरता की इस कडो में संश्लेषण का यह अंश एक बार पुनः शोध के प्रति हमारी निष्ठा, गुणवता एवं प्रतिष्ठा का परिचायक है।

वर्ष 2022 का अक्टूबर माह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासी भारतीयों के योगदान के रुप में भारत के गौरव एवं प्रतिष्ठा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। यूरोपीय परिदृश्य में, विशेषकर यूनाईटेड किंग्डम में, लोकतांत्रिक सत्ता परिवर्तन में भारतीय मूल के निवासी श्री ऋषि सुनक के प्रधानमंत्री पद ग्रहण करने से एक बार पुनः भारतीय ख्याति व संस्कृति वैश्विक पटल पर सुदृढ़ता से स्थापित हुई। स्वीकार्यता एवं सम्मानियता पर आधारित भारतीय बहुसंस्कृतिवाद ने प्रवासी भारतीयों की कार्यशैली तथा वैश्विक राष्ट्रों में उनके बढ़ते योगदान को सुदृढ़ता से प्रकट किया है। संसदीय लोकतंत्र की जननी कहे जाने वाले यूनाईटेड किंग्डम में शासनाध्यक्ष के शीर्ष पद पर पंहुचने वाले ऋषि सुनक प्रथम अश्वेत गैर–ब्रिटन हैं। यह परिवर्तन यूनाईटेड किंग्डम की अगुवाई में न केवल यूरोप में भारतीय कूटनीति के विभिन्न सरोकारों को संबोधित व संर्वधित करने में सफल होगा अपितु वैश्विक पटल पर भी भारतीय हितों को प्रचारित, प्रसारित एवं प्रमाणित करने में सक्षम रहेगा।

वैश्विक परिदृश्य की परिवर्तनीयता तथा विषय की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'वैश्विक कूटनीति के भारतीय सरोकार' विषय पर लेख आमंत्रित किये। पाँच उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ स्वातन्त्र्योत्तर भारत के परिवर्तनीय आयामों को भी संबोधित करने का प्रयास कर रहे हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को भी इंगित करते हैं।

प्रकाशित लेखों पर पाठकों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर ही हम अपने आगामी समसामयिक अंकों में अत्याधिक गुणात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे।

संपादक मंडल

सोमवार, 14 नवंबर 2022

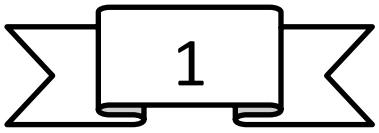

डायस्पोरा की संकल्पना और वैश्विक जगत में 'वसुधैव कुटुम्बकम' का प्रसार

निशांत यादव

सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, आगरा

डायस्पोरा का अथ–

उत्पत्ति के तौर पर डायस्पोरा वस्तुतः अपने मूल रूप में ग्रीक भाषा का शब्द है। जो शब्दार्थ या यूँ कहें की प्रतीकात्मक रूप से बीजों के प्रकीर्णन से जुड़ा हुआ है। क्योंकि इसका मतलब व्यापक रूप में छीटकर बोया जाना से है। शब्द विन्यास के रूप में स्पिएरो का अर्थ जहां बोने से है वहीं डाया का तात्पर्य क्षेत्र से है। बृहद रूप से यह माना जाता है कि यह शब्द सबसे पहले यहूदियों के पवित्र धर्म ग्रंथ ओल्ड टेस्टामेंट के विधि विवरण (ड्युटरोनोमी) के ग्रीक अनुवाद में यहूदी लोगों की स्थिति के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ था। जिसमें यह इस प्रकार वर्णित है कि, भूमंडल के सभी साम्राज्यों में तुम्हारी विद्यमानता यानी उपस्थिति रहेगी। इसके पश्चात फिर इस शब्द के प्रयोग का दूसरा उदाहरण थूसाईंडाईड्स के ग्रंथ 'हिस्ट्री ऑफ पेलोपोनेसियन वार' में मिलता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में अब तो यह शब्द अतिसामान्य हो चुका है। गैब्रियल शेफर डायस्पोरा के संदर्भ में लिखते हैं कि, बहुत प्राचीन काल में ही इस शब्द का प्रयोग दो प्राचीनतम जाति–राष्ट्रीय डायस्पोरा– यहूदी और ग्रीक–के लिए हुआ था। जो स्वैच्छिक और बलपूर्वक दोनों प्रकार के प्रवासों के परिणामस्वरूप अपनी मातृभूमि के बाहर स्थापित हुए थे।

डायस्पोरा की परिभाषा–

अब अगर डायस्पोरा को परिभाषित करने की बात करें तो ऑक्सफोर्ड इंग्लिश शब्दकोश अपने 1993 तक के संस्करण में डायस्पोरा शब्द की परिभाषा "गैर यहूदी राष्ट्रों में यहूदियों के प्रसार के रूप में" और वे सभी 'यहूदी जो बाइबल में वर्णित इज़राइल देश के बाहर रहते थे, के रूप में की है'। बाद में उन्होंने अपनी इस परिभाषा में बदलाव करते हुए जोड़ा कि, यह शब्द उन लोगों की

स्थिति के संदर्भ में भी है जो अपनी पारंपरिक मातृभूमि से बाहर रह रहे हैं। डायस्पोरा के अर्थ और परिभाषा को अगर और समावेशी बनाएँ तो इसे पारराष्ट्रीय प्रवास के रूप में देखा जा सकता है। पारराष्ट्रीय प्रवास को प्रवास के ऐसे प्रतिरूप के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें व्यक्ति अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार चले जाते हैं और नए राज्य में बस जाते हैं और जहां नवीन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक संबंध स्थापित कर लेते हैं। लेकिन यहाँ उल्लेखनीय है कि इस नवीन संबंधों से परे वे उस राष्ट्र से सदैव अपने सामाजिक अनुबंध बनाए रखते हैं जिसके की वे मूल निवासी हैं। ग्लिक शिलर कहते हैं कि, वे अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार पारराष्ट्रीय सामाजिक क्षेत्र में रहते हैं। इस तरह हम देखें तो डायस्पोरा का पारराष्ट्रीय गुण भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का ही परिणाम प्रतीत होता है। भूमंडलीकरण वस्तु, सेवा और मुद्रा के स्वतंत्र आवागमन को वैश्विक स्तर पर सुनिश्चित करता है। इस प्रक्रिया में कच्चे माल के क्रय, विनिर्मित समान के विक्रय और इन सब को संपादित करने के उपकरण के रूप में श्रमिक की आवश्यकता होती है और वैश्विक स्तर पर इन श्रमिकों की आपूर्ति डायस्पोरा की संकल्पना को और दृढ़ता प्रदान करती है।

डायस्पोरा की निर्मिति के कारक और समबंधित सैद्धांतिकी–

भूमंडलीकरण के साधनों यथा संचार–तकनीकी और परिवहन के तीव्र साधनों के बढ़ते प्रभाव नें डायस्पोरा की संकल्पना को और विस्तार प्रदान किया। वैश्वीकृत दुनिया में अब एक देश अन्य देश पर इतने निर्भर हो चले हैं की एक–दूसरे के सहयोग के बिना अपनी अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था का सुचारु रूप से संचालन नहीं कर सकते हैं। जिस वजह से सेवा के आदान–प्रदान के रूप में जब एक देश के नागरिकों का प्रवाह दूसरे देश में होता है तो डायस्पोरा की संकल्पना को अतिआवश्यक बना देता है। डायस्पोरा की इस निर्मिति की सैद्धांतिकी को लेकर अर्थशास्त्रियों और समाजशास्त्रियों में मुख्यतः दो तरह की अवधारणाएँ प्रचलित हैं। एक तरफ उदारवादी अर्थव्यवस्था के समर्थक विद्वान जहां इसको सकारात्मक पहलू के रूप में देखते और व्याख्यायित करते हैं वहीं समाजवादी और मार्क्सवादी अर्थव्यवस्था के समर्थक विद्वान इसको एक नकारात्मक पहलू के रूप में देखते और व्याख्यायित करते हैं। रोबर्ट कोहेन और जोसेफ नाई जैसे विचारक जो उदारवादी अर्थव्यवस्था के समथक हैं उनका मानना है कि भूमंडलीकरण की अवधारणा नें राष्ट्र–राज्यों के मध्य परस्पर सहयोग में अभिवृद्धि की है। इसने एक देश की आवश्यकता को दूसरे देश की वस्तु, सेवा, मुद्रा आदि के विनिमय के माध्यम से पूर्ण करने की सफल कोशिश की है। जिस वजह से है एक व्यक्ति दूसरे देश में प्रवास या स्थानांतरण के लिए उत्सुक होता है और इस प्रवास के माध्यम से न केवल अपनी और अपने देश की आवश्यकता की पूर्ति करता है वरन प्रवासित देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों तक को व्यापक स्तर पर प्रभावित करते

हुए विश्व को और अधिक समावेशी एवं सह–अस्तित्वदायी बनाने के लिए प्रेरित करता है। इस मत के तहत हम डायस्पोरा की संकल्पना को पाँच टी के आधार पर समझ सकते हैं–

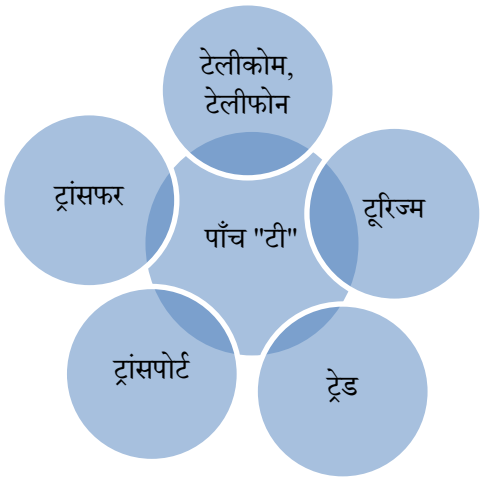

साभार: (IGNOU के परास्नातक 'डायस्पोरा अध्ययन' के इकाईः 17 भारतीय प्रवासी समुदाय–जन्मभूमि अनुबंधन से)

वहीं इसके विपरीत दूसरी तरफ मार्क्सवादी अर्थव्यवस्था के समर्थक विद्वान इस पूरी प्रक्रिया को शोषण के रूप में देखते और व्याख्यायित करते हैं। समीर अमीन, कार्डोसो, डॉस सैंटोस, ए.जी. फ्रैंक, इमैनुअल वालरस्टीन सरीखे विद्वानों का मत है कि यह प्रक्रिया अविकसित और विकासशील देशों के कच्चे माल के रूप में प्राकृतिक संसाधनों एवं सस्ते श्रमिक के रूप में मानव समुदाय के आर्थिक एवं दैहिक शोषण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस मत के तहत डायस्पोरा की संकल्पना महज तृतीय विश्व के 'बौद्धिक निष्कासन' एवं 'अप्रत्यक्ष आर्थिक एवं दैहिक शोषण' को एक खूबसूरत नाम देने के अलावा और कुछ नहीं है ताकि इस संकल्पना से अभिभूत होकर हम कभी प्रथम विश्व के देशों की नव–उपनिवेशवादी, नव–साम्राज्यवादी चरित्र की तरफ न देख पाएँ और न ही उनके विरुद्ध कोई प्रतिरोध कर पाएँ।

भारतीय डायस्पोराः

इस भूमंडलीकृत विश्व में बढ़ते प्रवास से सभी जगहों पर अनेक स्थानों के लोग होते हैं, जो एक मायने में तो सब जगह के हैं वहीं दूसरे मायने में कहीं के भी नहीं माने जा सकते हैं। वह अपने वर्तमान पोषणकर्ता देश के नागरिक हो सकते हैं लेकिन उनकी पहचान उनके उस मूल देश से

होती है जहां उनकी उत्पत्ति की जड़ें जुड़ी हुई होती हैं। वह भले ही अपने गृह देश की जड़ों और परंपराओं से दूर रहते हों लेकिन अपने प्रवास के देश में जातीय समुदाय के रूप में सचेतन रूप से उससे जुड़े रहते हैं। भारतीय डायस्पोरा की चर्चा करें विगत 9 जनवरी को भारत सरकार द्वारा अपना 16वाँ वार्षिक प्रवासी भारतीय दिवस मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भारत में केंद्र सरकार प्रत्येक वर्ष 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन करती है। क्योंकि इसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सुदूर दक्षिण अफ्रोका से वर्ष 1915 में भारत वापस आये थे। सम्पूर्ण विश्व में महात्मा गांधी को सबसे बड़ा प्रवासी माना जाता है, जिन्होंने न सिर्फ भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया अपितु दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों के जीवन को हमेशा के लिए बदल कर रख दिया। दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला, घाना में कोफी अन्नान तो अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर भी उनसे प्रेरणा लेकर अपने अपने देशों में स्वतंत्र एवं समतामूलक राज्य की स्थापना के लिए संघर्षरत रहे। इस तरह गाँधी के भारत आगमन को यादकर यह दिन भारत की उस विशाल जनसंख्या तक पहुँचने, उनकी उपलब्धियों को सम्मानित करने और उन्हें अपने देशज भारतीय जड़ों से जोड़ने का दिन है जो वस्तुतः भारत के हैं लेकिन वर्तमान में भारत में नहीं रहते हैं। इसके साथ ही यह दिन भारत की विकास यात्रा में इन प्रवासी भारतीयों के जुड़ाव के लिये एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करने का अवसर सुनिश्चित करता है।

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के एक प्रतिवेदन के अनुसार सम्पूर्ण विश्व के सौ से अधिक राष्ट्रों में 3.2 करोड़ अनिवासी भारतीय यानी की भारतीय डायस्पोरा निवास करते हैं। भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों की संख्या में पिछले 28 वर्षों में 346 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण अपनाने से पहले 1990 तक भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों की संख्या लगभग 90 लाख थी। जो वर्तमान में बढ़कर 3.2 करोड़ तक पहुँच गई है। राजनीतिक महत्व की दृष्टिकोण से देखें तो इस समय विश्व के 3 राष्ट्रों ब्रिटेन, पुर्तगाल और आयरलैंड में प्रधानमंत्री जैसे राष्ट्र के सबसे उच्च राजनीतिक पद पर भारतीय मूल के व्यक्ति कार्यरत हैं। ब्रिटेन में ऋषि सुनक, आयरलैंड में लियो वराडकर और पुर्तगाल में एंटोनियो कोस्टा प्रधानमंत्री हैं। इसके साथ ही विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका की उप राष्ट्रपति कमला हैरिस भी भारतीय मूल की होने की वजह से भारतीय डायस्पोरा में आती हैं। अफ्रीका महाद्वीप के देश गुयाना के राष्ट्रपति मो. इरफान अली व सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिकाप्रसाद संतोखी भी भारतीय मूल के हैं। इन राष्ट्रीय नेतृत्व वाले पदों के अतिरिक्त लगभग 30 राष्ट्रों में 285 से ज्यादा सांसद भारतीय मूल के हैं। ये प्रवासी भारतीय अर्थात् भारतीय डायस्पोरा अपने मूल देश के हितों को निवासित देशों में आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं यानी वे एक तरह से दोनों राष्ट्रों के मध्य पुल का कार्य

करते हैं। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण के बाद अमरीका द्वारा लगाए गए प्रतिबंध और NPT एवं CTBT पर हस्ताक्षर न करने के बावजूद भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता इसका एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। जिसमें हम देखते हैं कि अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों द्वारा इस परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिये वहां के राष्ट्रीय नियामकों से सफलतापूर्वक पैरवी की गई।

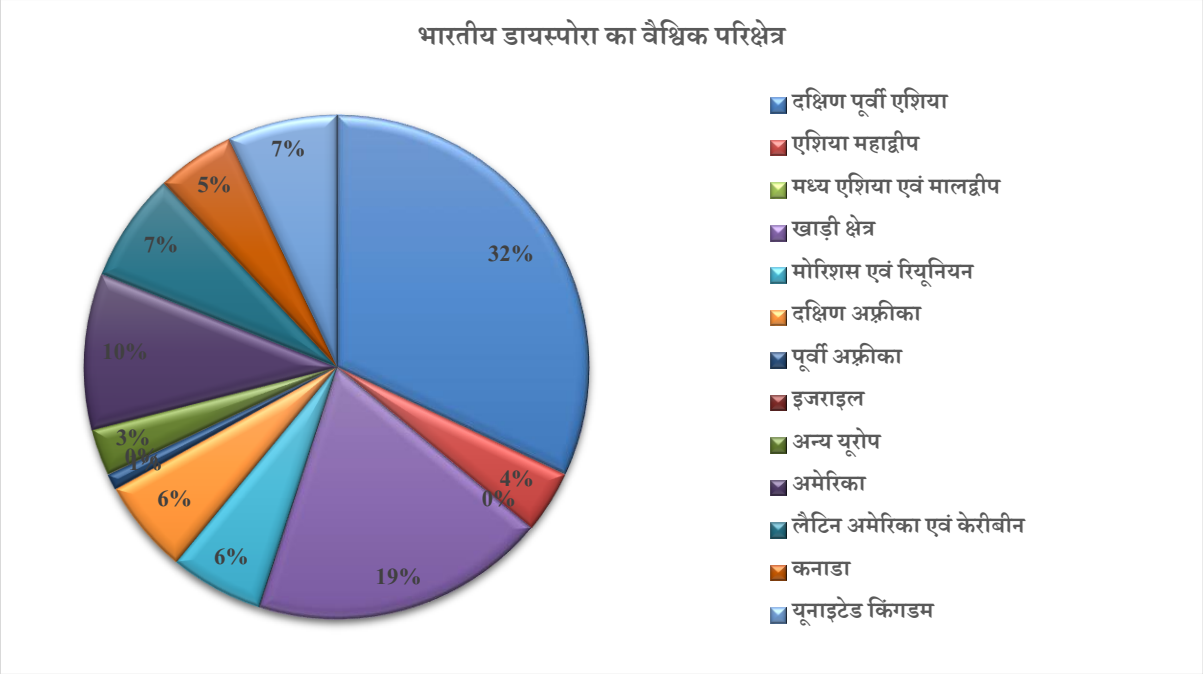

स्रोतः सिंघवी प्रतिवेदन, 2001, भारत सरकार

इसके अतिरिक्त भारतीय डायस्पोरा न केवल भारत की मृदु शक्ति (Soft Power) का हिस्सा हैं, अपितु पूर्ण रूप से हस्तांतरणीय राजनीतिक मतदाता भी हैं। अनेक देशों में शीर्ष राजनीतिक पदों पर कार्यरत होने के साथ ही भारतीय मूल के बहुत से लोग संयुक्त राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और इन जैसे अन्य बहुपक्षीय अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में कार्य करने के साथ ही भारत के राजनीतिक प्रभुत्व को वैश्विक स्तर पर बढ़ा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर हम गीता गोपीनाथ को देख सकते हैं जो वर्ष 2019 से 2022 तक अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की मुख्य आर्थिक सलाहकार रही हैं और वर्तमान में (21 जनवरी 2022 से) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की उप–प्रबंध निदेशक के रूप में कार्य कर रही हैं। गीता गोपीनाथ पहली भारतीय–अमेरिकी अर्थशास्त्री हैं, जिन्होंने कोष में इतने बड़े दायित्व को संभाला है।

प्रवासियों भारतीयों के लिए अपने मूल देश के विकास में सहायता करने का सबसे सहज तरीका है अपनी आमदनी का एक हिस्सा वहां भेजना। भारत की मृदु शक्ति का प्रसार और आर्थिक रूप से भारत के उत्थान में योगदान देने की प्रवासियों की पर्याप्त क्षमता को भारत सरकार से आशाजनक स्वीकृति मिलने लगी है। यहाँ उल्लेखनीय है कि भारतीय डायस्पोरा कई विकसित देशों में सबसे धनी अल्पसंख्यकों में से एक हैं। इन भारतीय प्रवासियों द्वारा अपने मूल देश भारत में अपनी आमदनी का एक हिस्सा भेजने से भारत के राष्ट्रीय राजस्व के भुगतान संतुलन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार घाटे को कम करने में सहायता प्रदान करता है। ध्यान देने योग्य तथ्य है कि, विश्व में भारत प्रवासियों द्वारा सर्वाधिक धन प्राप्त करने वाला राष्ट्र है। इन सब के अतिरिक्त कम कुशल श्रमिकों के प्रवास (विशेषकर खाड़ी के देशों में) ने भारत में प्रच्छन्न बेरोजगारी को कम करने में सहायता की है।

निष्कर्ष:

Held, David (2004). A Globalizing World: Culture, Economics and Politics. London: Routledge

Jain, R.K. (1993). Indian Communities Abroad. New Delhi: Manohar Publication

चोसडुवस्की, मिशेल (2009). गरीबी का वैश्वीकरण. मेरठ, संवाद प्रकाशन

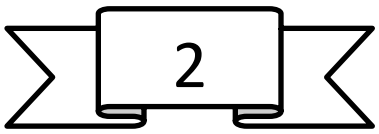

प्रवासी भारतीयः बढ़ती संख्या एवं बढ़ती भूमिका

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

डायस्पोरा शब्द ग्रीक शब्द डायस्पेयरिन से लिया गया है, जिसका अर्थ है–फैलाव। समय के साथ, यह शब्द विकसित हुआ, और अब एक सामान्य मूल या संस्कृति के साथ किसी विशेष राष्ट्र से संबंधित किसी भी व्यक्ति को संदर्भित करता है, किन्तु जो विभिन्न कारणों से अपनी मातृभूमि के बाहर रहता है।

भारत में, डायस्पोरा को सामान्यत गैर–निवासी भारतीयों (एनआरआई), भारतीय मूल के व्यक्तियों (पीआईओ) और भारत के विदेशी नागरिकों (ओसीआई) को सम्मिलित करने के लिए समझा जाता है, जिनमें से पीआईओ और ओसीआई कार्ड धारकों को 2015 में एक श्रेणी– ओसीआई– के अंतर्गत विलय कर दिया गया था। केन्या और मलेशिया जैसे पूर्व उपनिवेशों में गिरमिटिया मजदूरों के रूप में ब्रिटिश शासन के दौरान बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासन शुरू हुआ। यह स्वतंत्रता के पश्चात के समय में भी जारी रहा, जिसमें विभिन्न सामाजिक तबके के भारतीय यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और खाड़ी देशों जैसे देशों में जा रहे थे। भारत प्रारंभ में इस दृष्टिकोण के प्रति संवेदनशील था कि प्रवासी भारतीयों के हितों का समर्थन करने से मेजबान देश नाराज हो सकते हैं, जिन्हें उनके कल्याण और सुरक्षा के लिए पूर्ण रूप से जिम्मेदार होना चाहिए।

नेहरू के विचार थे कि डायस्पोरा भारत से अपने अधिकारों के लिए लड़ने की आशा नहीं कर सकता था और इसलिए 1950 के दशक में भारत की विदेश नीति को गैर–हस्तक्षेप के एक मॉडल के रूप में संरचित किया गया था, जब भी श्रीलंका, म्यांमार, आदि में प्रवासी भारतीयों को कठिनाई हुई थी।

तथापि, राजीव गांधी प्रथम प्रधानमंत्री थे जिन्होंने 1980 के दशक में विदेशों में भारतीयों को आमंत्रित करके, उनकी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना, प्रवासी चीनी समुदायों की तरह, राष्ट्र निर्माण में भाग लेने के लिए डायस्पोरा नीति को परिवर्तित कर दिया।

सन् 2000 के पश्चात् अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के अंतर्गत, प्रवासी भारतीय विषय के एक अलग मंत्रालय, भारतीय मूल के व्यक्ति (पीआईओ) कार्ड, प्रवासी भारतीय दिवस, प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार, भारत के प्रवासी नागरिक जैसे कई सकारात्मक उपाय आए। कार्ड, एनआरआई फंड और विदेशों में भारतीय नागरिकों के लिए मतदान अधिकार।

वर्तमान सरकार ने प्रवासी जुड़ाव के लिए 2016 में श्भारत को जानो कार्यक्रमश (केआईपी) नामक एक योजना शुरू की है, जो भारतीय मूल के युवाओं (18–30 वर्ष) को उनकी भारतीय जड़ों और समकालीन भारत से परिचित कराती है।

प्रवासी भारतीय एक नई शक्ति के रूप में अंतर्राष्ट्रीय पटल पर उभरे है। व भिन्न–भिन्न देशों में भारत के संबंधों को लेकर उनकी भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो रही है। तथा पिछले दशक में भारत ने किस तरीके से समर्थन प्राप्त किया है। व उसके परिणाम व प्रभाव क्या रहे है।

प्रवासी भारतीय शब्द पिछले एक दशक में इस शब्द का अर्थ व इसकी शक्ति व प्रभाव परिवर्तित हो गए है। इनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है, सदियों से लोग भारत के बाहर जाते रहे है। अफ्रीका, श्रीलंका, म्यांमार आदि। परंतु पिछले दशकों में भारत से बाहर जाने वाले लोगों के कारण परिवर्तित रह है।

प्रोफेसर सुनील कुमार चौधरी के अनुसार, वैश्विक पटल पर भारतीय प्रवासी के तीन परिवर्तनों को देखा जा सकता है।

1. भारत से भारतीयता का परिवर्तन– सभी भारतीय एकजुट व एकत्र होकर उस सुदृढ़ता का परिचायक बनते है। विश्व मंच पर भारत से भारतीयता का परिवर्तन देखा जा सकता है।
2. भारत एक राष्ट्र के रूप में सन् 1947 में अस्तित्व में आया, किन्तु अब यह परिवर्तन अस्मिता के रूप में देखने को मिलता है। अस्तित्व से अस्मिता में परिवर्तन पिछले पाँच दशकों में देखने को मिल रहा है। भारत की अस्मिता अधिक उभरकर आ रही है।
3. भारत एक राजनीतिक व आर्थिक भूमिका के साथ–साथ सांस्कृतिक भूमिका के रूप में भी भारत का महत्व बढ़ता जा रहा है। इस बढ़ते महत्व को प्रवासी भारतीयों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। प्रवासी शब्द संबद्धता का भाव {Sense of Belongingnes} का परिचायक है। परंतु अब यह आत्मीयता के भाव {Sense of Bonding} में परिवर्तित हो गया है।

आर्थिक रूप से भी प्रवासियों की भूमिका को यदि देखा जाए तो भारत–अमेरिका नूक्लीअर डील में अमेरिका में प्रवासियों ने मिलकर तथा एकजुट होकर काम किया। इसके साथ ही भारतीयों के

आत्मबल और मनोबल ने प्रवासी भारतीयों को राजनीतिक व्यवस्था से जोड़े रखा व आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक रूप से भी जुड़े।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए प्रवासी भारतीयों से अपील की है। प्रधानमंत्री ने विश्वभर में भारतीय प्रवासियों क संबंधों के लिए रिश्ता नाम के एक पोर्टल की शुरुवात भी की है। प्रत्येक वर्ष के 9 जनवरी को भारतीय प्रवासी दिवस मनाया जात है। भारत का वैश्विक प्रवासी 32 मिलियन से अधिक लोगों का होने का अनुमान है। यह दिवस 1915 में दक्षिण अफ्रीका से महात्मा गांधी के आगमन की याद में मनाया जाता है।

ऋषि सुनक ब्रिटेन के पहले भारतीय मूल के पीएम के रूप में पदभार ग्रहण किया। ब्रिटेन को 210 वर्षों में सबसे कम आयु के प्रधाममंत्री को नियुक्त किया है। ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री ने आर्थिक संकटों के विरुद्ध स्थिरता का संकल्प लिया। अपने बच्चों के उत्तम भविष्य के लिए चुनौतियों को पार करने की आवश्यकता है। ऋषि सुनक–भारत–यूके संबंधों में दोतरफा आदान–प्रदान होना चाहिए।

अंत में कहा जा सकता है कि डायस्पोरा एक शक्तिशाली शक्ति, निवेश और सांस्कृतिक विविधता के रूप में कार्य करता है। अतः सभी क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक विकास में प्रवासी भारतीयों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

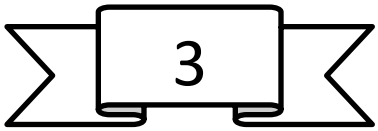

प्रवासी भारतीय एवं वैश्विक राजनीतिः सरोकार एवं संभावनाएं

सर्विष्ठा जाट

विद्यार्थी, हिंदी विभाग, ग्वालियर विश्वविद्यालय

बीतें दिनों ब्रिटेन की राजनीतिक अस्थिरता में एक नया राजनीतिक आयाम जुड़ा जिसने वैश्विक राजनीति का अपनी ओर ध्यान आकृष्ट किया। वह, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के रूप में किसी भारतवासी (ऋषि सुनक) का नियुक्त होना। जिसे विश्व–राजनीति में बढ़ते भारतीय प्रवासियों की एक आर कड़ी के रूप में देखा जा रहा है, बीते कुछ दशकों से विश्व राजनीतिक पटल पर प्रवासी भारतीयों ने अपनी पैठ कायम की है, बात चाहे ऋषि सुनक के ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बनने की हो, कमला हेरिस के उपराष्ट्रपति (अमेरिका) की हो या केरीबियन देशां में भारतीयो के राजनीतिक सकियता की हो।

प्रवासी भारतीयों (ऐसे भारतीय जो भारत से बाहर अन्य देशों में निवासरत हो) को समझने के लिए हमें प्रवास को समझना होगा। भारतीय सन्दर्भ में 'प्रवास' का प्रथम उल्लेख हमें 'अशोक के शिलालेख' से प्राप्त होता है। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में श्रीलंका, युनान, अफगान, जावा–सुमात्रा आदि देशां में अपने दूत भेजे। इसके पश्चात् 11वीं शताब्दी में दक्षिण–भारत के महान चोल सम्राटों ने दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों की विजयी यात्रा की। जिसके फलस्वरूप इन देशों में भारतीयों का प्रवास हुआ। शास्त्रों में कहा गया है कि–

''यस्तु संचरते देषान सेवते यस्तु पाण्डेन,

तस्य विस्तारिता बुधिस्थलें बिन्दु रिवाम्भासि।''

'अर्थात् जो विश्व में भ्रमण करता है वह ज्ञान व अनुभव अर्जित करता है उसके द्वारा अर्जित ज्ञान व अनुभव इतना देना होता है कि कितना ही गहरा व बड़ा समन्दर क्यों ना हो लेकिन उस पर एक बूँद तेल की पड़ जाए तो प्रभावी रूप से फैल जाती है। इसी प्रकार प्रवासी भारतीयों ने विश्व पटल के सागर पर अपने ज्ञान व अनुभव को विस्तारित किया, जो हमें प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलता है।

ब्रिटिश काल में भारतीयों का प्रवास मजदूर के रूप में मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, शौसेल्स आदि देशों में हुआ जिन्हे 'गिरमिटिया मजदूर' कहा जाता था। लेकिन ऑपनिवैशिक राजतंत्र की समाप्ति के बाद इन मजदूरों में उन देशों में अपने ज्ञान, कौशल व संस्कारो की बदौलत राजनीतिक सकियता क साथ उच्च पदो का प्राप्त किया है जिसमें सूरीनाम के राष्ट्रपति (चंद्रिका प्रसार संतोखी, मॉरीशस के राष्ट्रपति अरिरूद्ध जगन्नाथ) व उपराष्ट्रपति (अन्गीरी चेट्टियार), कुराकाओं के प्रधानमंत्री (भुजीन रघुनाथ) आदि सम्मिलित है।

इसके बाद 1970 के दशक में पश्चिम एशिया में हुई सहसा तेल वृद्धि से उत्साहित भारत के अर्द्धकुशल व कुशल श्रमिकों का आर्थिक प्रगति हेतु खाड़ी देशों में प्रवास प्रारंभ हुआ जो आज भी जारी है अरब देशों में भारतीय प्रवासी ने अपने विश्वास, ईमानदारीं, मेहनत व संस्कारो की एक अमिट छाप छोड़ी है जिसें हम सउदी अरब में बने पहले हिन्दू मंदिर व हाल ही में मनाये गये छठपूजा के महोत्सव के रूप में देख सकते है जिसे इस्लामिक क्षेत्र में एक कान्ति के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि अरब देश में प्रायः दूसरी संस्कृति के साथ इस प्रकार के तालमैल प्रायः कम देखे जाते है ऐसे में शखो का हर्षोल्लास के साथ इन उत्सवों के मनाने के पीछे भारतीय प्रवासी महत्वपूर्ण कारण है।

भारतीयों के प्रवास की नवीनतम लहर मुख्य रूप से ज्ञान आाधारित नवीनतम लहर है जिसकें अन्तर्गत सोफ्टवेयर, इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक, प्रबंध परामशदाता, वित्तीय विशषज्ञ तथा 1980 से संचार प्रौधागिकी विशषज्ञ सम्मिलित है। इन्होने अमेरिका, कनाड़ा, न्यूजीलेण्ड, फ्रांस, ब्रिटेन आदि देशों में प्रवास किया।

वर्तमान में विश्व में लगभग 3 करोड़ 23 लाख के आस–पास प्रवासी भारतीयो की जनसंख्या जो के विश्व के लगभग सभी देखों में (200 से अधिक) निवासरत् है। जो विश्व राजनीतिक पटल पर अपने राजनीतिक हस्तक्षेप को भी सुनहरे रूपों में दर्शाते है जैसे सूरीनाम के राष्ट्र–अध्यक्ष, न्यूजीलण्ड की मंत्री (प्रियंका राधाकृष्णन), न्यूजीलेण्ड के पूर्व गर्वनर जनरल (आंनद सत्यानंद), सिंगारपुर विपक्ष नेता (प्रीतम सिंह), त्रिनिडाद व टोबेगो के पूर्व प्रधानमंत्री (कमला प्रसाद बिसेसर) आदि विश्व राजनेताओं ने अपने साथ भारत की भी राजनीतिक स्थिति को विश्व स्तर पर मजबूत किया है। साथ ही बढ़ता जा रहा है जैसे Google के CEO (सुन्दर पिचाई), माइकोसोफ्ट (सत्यानडेला, twitter पराग अग्रवाल), नोकिया (राजीवसूरी), IMF (गीतागोपीनाथ) के साथ ही IBM में अधिकतर कर्मचारी भारतवाशो है, NASA के लगभग 37 प्रतिशत कर्मचारी भारतीय मूल के है।

प्रवासी भारतीयो ने विश्व में अपनी ईमानदारी, विश्वास, मेहनत व संस्कारों की एक अमिट छाप छोड़ी है व स्वंय को विश्व के साथ व विश्व को भारत के साथ सामाजिक, आर्थिक, सास्कृतिक व

राजनीतिक दृष्टि से मजबूती से जोड़ा है। विश्व राजनीतिक में भारत के सरोकार को प्रवासी भारतीयो के बहुत हद तक सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है उदाहरण के तौर पर देख तो कहा जाता है कि इंडिया–ने–न्यूक्लियर डील हस्ताक्षर पर अमेरिकी कांगेस में बहुत विरोध था लेकिन वहाँ पर इंडियन डायस्पोरा ने एक गुट बनाकर जहाँ–जहाँ विरोधी पक्ष था वहाँ–वहाँ उनसे मिलकर विरोध को दर किनार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

और विस्तृत रूप से देखे तो प्रवासी भारतीय व भारत के पक्ष में पिछले 7 दषको में तीन प्रकार के परिवर्तन मुख्यतः देखने को मिलते है–

1. भारत से भारतीयता की ओर परिवर्तन पिछले कुछ दशकों से प्रवासी भारतीयो का संबंध भारत से था और एक संकीर्ण सा दायरा था जिसे पिछले कुछ वर्षों में सरकार के द्वारा विदेशो में भारतीय प्रवासियों से मिलना, हाउडी मोदी जैसे कार्यकमों का आयोजन जिसमें भारत का प्रमुख, भारतीय प्रवासी व स्थानीय सरकार की एक साथ मौजूदगी ने भारत से भारतीयता की ओर संबंधों को अग्रसर किया ऐसे कार्यकमों से प्रवासी भारतीयों का भारत की ओर व भारत का अपनों की आर झुकाव ने विश्व स्तर पर भारत को राजनीतिक, सास्कृतिक व सामाजिक व आर्थिक रूप से मजबूत बनाया है। सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक प्रवासी भारतीय प्रवासी है जिससे विश्व स्तर पर भारत को शक्तिशाली बनाया। साथ ही आर्थिक रूप से मजबूती भी प्रदान की क्योंकि सर्वाधिक प्रवासिया द्वारा भेजी गई मुद्रा प्राप्त करने में भारत प्रथम स्थान पर है। जो भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करती है।
2. 1947 में भारत अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर एक राश्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया किंतु अब जो परिवर्तन है व राष्ट्र से अस्मिता के रूप देखने को मिलता है भारत की पहचान एक राष्ट्र से ऊपर उठकर अब कई व्यापक अथा में उभरकर सामने आई है जो हमें हाल ही में विश्व राजनीति में भारत की बढ़ती मजबूती के रूप में देखने को मिलती है फिर चाहे क्वाड जैसे सगंठन हो या द्विपक्षीय वार्ता या फिर प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानो में भारत की मजबूत स्थिति। उदा0 के तौर पर न्युकैन युद्ध के समय जहॉ विश्व दो खेमों मे बंट गया वही भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेशो नीति के अंतगत स्वंय को गुट निरपेक्ष बनाए रखा। अमेरिका व यूरोपीय देशा के सेंसर के बावजूद भारत ने रूस से व्यापार जारी रखा तो वही इन खेमा से भी अपने आर्थिक व सामाजिक, राजनीतिक संबंधो को बनाए रखा इस शक्ति के रूप में भारत की विश्व पहुँच में प्रवासी भारतीयों का अमूल्य योगदान है क्योंकि वह विश्व के किसी भी कोने में रहे भारत के

साथ उनका संबंध मजबूत रहा है जो NDA सरकार के पिछले कुछ कदमा मे और भी मजबूत हुआ है।

''ख्याल उसका हरक लम्हा मन में रहता हैं,

वो शममा बन के मेरी अंतुमन में रहता है।,

मै तेरे पास हूँ, परदेस में हूँ, खुश भी हूँ,

मगर ख्याल तो हर दम वतन में रहता है।''

(डॉ अंजना संधीर प्रवासी भारतीय)

3. भारत का अब राजनीतिक, आर्थिक भूमिका के साथ सांस्कृतिक रूप से विश्व स्तर पर महत्व बढ़ा है। जिसमें प्रवासी भारतीयों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। आज योग सम्पूर्ण विश्व में भारत को पहचान दिलाता है वही गांधीवाद, बौद्धसत्व आदि ने समपूर्ण में भारत को भिन्न सांस्कृतिक पहचान दिलाई है आदि को फैलाने में प्रवासी भारतीयों का महत्वपर्ण योगदान रहा है। साथ ही भारत में विभिन्न विश्व–स्तर की संस्थानो का रूझान बढ़ा है जिससे भारत में तकनीकी विकास, रोजगार, शिक्षा आदि में वृद्धि हुई है जो कहीं ना कहीं भारत के लिए प्रवासी भारतीयों की कुछ करने की ललक का ही परिणाम है। यद्यपि भारत इस समय प्रतिभा पलावन की समस्या का सामना कर रहा है। परन्तु फिर भी भारत के लिए प्रवासियों का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण योगदान है व प्रवासी भारतीयो ने कई संभावनाओं को जन्म दिया है वह चाहे विश्व राजनीतिक में भारत की पहुँच हो या फिर भारत की ओर विश्व का रूझान भारत में रोजगार सृजन हो या विश्व में भारतीय अस्मिता का परचम सभी में इन प्रवसियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रवासी भारतीयों के बढ़ते महत्व को देखते हुए व भारत से इन्हें जोड रखने के लिए भारत सरकार द्वारा 9 जनवरी को 1 प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योकि 9 जनवरी 1915 को भारत के सबसे बड़े प्रवासी मोहनदास करमचन्द गांधी भारत लोटे और भारतीयों के योगदान को चिन्हित करने व उन्हं भारत से जोड़ने के लिए भारत सरकार द्वारा कई कार्यकम आयोजित किए जाते है जैसे विदेश मंत्रालय द्वारा प्रवासी भारतीय सम्मेलन, प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार, भारत को जानिये क्विज कार्यकम अपनी जड़ो को जानो कार्यकम आदि संचालित किए जाते है।

वही विदेश मंत्रालय द्वारा विश्वभर में लगभग 3.23 लाख भारतीय प्रवासियों को एक साथ जोड़ने के लिए 'ग्लोबल प्रवासी रिश्ता' पोर्टल लॉन्च किया। सरकार द्वारा कोरोना

व रूस–युक्रेन युद्ध के बाद भारत लोटे प्रवासियों के लिए 'प्रवासी कोशल विकास योजना' तथा प्रवासी बच्चों के लिए छात्रवृत्ति कार्यकम (प्रतिवर्श 100 छात्रवृत्तियाँ दी जाती है) आदि संभावनीय कार्य किए जा रहे है व सरकार द्वारा संभावनाओं को तलाशा जा रहा है कहा जा रहा है कि भारत व ब्रिटेन के मध्य मुक्त व्यापार समझौते पर हुई चर्चाओं को ऋषि सुनक के प्रधानमंत्री बनने के बाद अमलीय जामा पहनाया जाने की संभावना के रूप में देखा जा रहा है।

अतः इस प्रकार प्रवासी भारतीयों ने विश्व पटल पर भारत को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक मजबूती प्रदान की है व भविष्य में भारत की भुमिका की संभावनाओं को ओर अधिक मजबूती प्रदान करेगा।

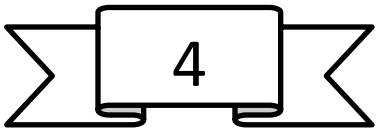

वर्तमान में भारतीय प्रवासियों की स्थिति

नीलम

विद्यार्थी, दौलत राम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

इस लेख में प्रवासी भारतोयों की स्थिति व वैश्विक राजनीति में उसकी संभावनाओं को मुल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। प्रवासी शब्द कोई नवीन परिघटना नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भी भारतीयों द्वारा प्रवास किया जाता था। परंतु वर्तमान समय में परिस्थिती परिवर्तन रूप है। मूल रूप से भारत सरकार भारतीय प्रवासियों के महत्व को पहचानती है, जो भारत से दूर होने के बावजूद वैश्विक मंच पर अपनी चमक बिखेर रहे हैं। डायस्पोरा ग्रीक मूल का एक शब्द है जिसका अर्थ है बिखरना। इसका उपयोग उन लोगों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। जो रोजगार, व्यवसाय या किसी अन्य उद्देश्य के लिए विश्व के अन्य भागों में रहने के लिए अपनी जन्मभूमि को छोड़ देते हैं। भारतीय डायस्पोरा सामान्य शब्द है जिसका उपयोग उन लोगों को संबोधित करने के लिए किया जाता है। जो वर्तमान में भारत गणराज्य की सीमाओं के भीतर आने वाले क्षेत्रों से चले गए हैं। इसमें एनआरआई (अनिवासी भारतीय) और पीआईओ (भारतीय मूल के व्यक्ति) सम्मिलित हैं। भारतीय प्रवासियों की संख्या 30 मिलियन से अधिक होने का अनुमान है।

तथापि नौकरियों और उत्तम आर्थिक संभावनाओं की तलाश में लोगों का आना–जाना उतना ही प्राचीन रहा है, जितना कि प्राचीन सभ्यता, प्रवासन की घटना ने 19वीं शताब्दी के दौरान ही गति प्राप्त की। 20वीं शताब्दी की शुरुआत मुख्य रूप से सामाजिक मानवविज्ञानी द्वारा संचालित बाहरी लोगों द्वारा स्थानीय समुदायों के अध्ययन का साक्षी बना। 1960 और 1970 के दशक के दौरान ही लोगों, समूहों और समुदायों के प्रवासन को सैद्धान्तिक रूप देने के प्रयास हुए। 1980 के दशक से वैश्वीकरण की प्रक्रिया जिसने वास्तव में पुरुषों, संदेशों और सामग्रियों (अटल, 2001) के प्रवाह को तेज किया, न केवल प्रवासन के नए परिदृश्य खोले – प्रवासन और उत्प्रवास दोनोंय इसने डायस्पोरा अध्ययन के क्षेत्र में नई अवधारणा और सिद्धांत भी लाया। सैंडविच कल्चर एक ऐसी अवधारणा थी जिसे इस जटिल प्रक्रिया के सिद्धांत को सुविधाजनक बनाने के लिए एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री योगेश अटल ने गढ़ा था।

एक स्थान से दूसरे स्थान पर, गाँव से शहर तक लोगों की आवाजाही का एक लंबा इतिहास रहा है। यद्यपि, इस तरह के आंदोलन, आमतौर पर भ्रमण और रोजगार या विजय और विस्तार के लिए सहारा लिया जाता था, प्रवास के स्थान पर दौरे और यात्रा के संदर्भ में समझाया गया था। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान प्रवासन, उत्प्रवास और डायस्पोरा जैसी अवधारणाओं को केवल आधुनिक समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक और मानवशास्त्रीय अनुसंधान में साहित्यिक अनुवाद मिला। यद्यपि प्रवासन अध्ययनों ने सामाजिक विज्ञान के विद्वानों का ध्यान बहुत पहले आकर्षित किया था, प्रवासन का व्यवस्थित अध्ययन केवल उन्नीसवीं शताब्दी में उपनिवेशवाद की शुरुआत के साथ हुआ, जबकि डायस्पोरा अध्ययनों पर साहित्य ने 1980 के दशक से वैश्वीकरण के उत्कर्ष के बाद से एक उतार–चढ़ाव का अनुभव किया। बलपूर्वक प्रवासन से लेकर स्वैच्छिक प्रवासन तक, डायस्पोरा पिछले कुछ वर्षों में बहुत अधिक परिवर्तन से गुजरा है।

भारत सरकार प्रवासी भारतीयों के महत्व को पहचानती है क्योंकि इससे भारत को आर्थिक, वित्तीय और वैश्विक लाभ हुए हैं। प्रत्येक वर्ष भारत सरकार 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाती है। 2021 में हमने 16वां प्रवासी भारतीय दिवस मनाया, जिसका एक अनूठा विषय है– आत्मनिर्भर भारत में योगदान। हम इस तिथि का चयन इसलिए करते हैं क्योंकि 9 जनवरी 1915 को महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए और एक महान प्रवासी बने।

वर्तमान सरकार ने प्रवासी भारतीयों के लिए 2016 में 'भारत को जानो कार्यक्रम' (केआईपी) नामक एक योजना शुरू की है जो भारतीय मूल के युवाओं को उनकी भारतीय जड़ों और समकालीन भारत से परिचित कराती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों के परिणामस्वरूप वैश्विक मंच पर भारतीय प्रवासी की स्थिति बेहतर हुई है। विभिन्न देशों की मोदी की यात्रा के समय जिसमें मुख्यतः फ्रांस, अमेरिका और हाल ही में सम्पन्न हुआ G20 का शिखर सम्मेलन सम्मिलित है, प्रस्तुत करते हैं कि आज भारतीय डायस्पोरा पहले से अधिक समृद्ध है और भारत के विकास में उसकी भागीदारी व सह–भागीदारी बढ़ रही है। यह प्रेषण, निवेश, विदेशों में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने और अपनी बुद्धि और उद्योग द्वारा भारत की एक अच्छी छवि बनाने के लिए योगदान देता है।

संदर्भ–सूची

R Brubaker (2017) Revisiting "the "diaspora'diaspora", *Ethnic and Racial Studies*, 40 (9), 1556-1561

"Self-Reliant India: Role of Diaspora", Show Aaj Ki Charcha, Sansad TV, 11 Jan 2021.

https://www.migrationpolicy.org/

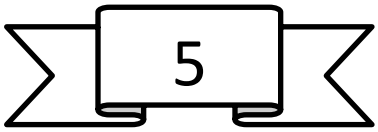

वैश्विक मंच पर प्रवासी भारतीयों का योगदानः एक महाशक्ति के रूप में भारत

दृष्टि साह

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

हमारे राष्ट्र के गौरव के प्रतीक के रूप में भारतीय प्रवासी विश्व भर में अपनी मातृभूमि का प्रतिनिधित्व करत है। वे विभिन्न देशों के मध्य अंतर्संबंधों और मूल मूल्यों को सुदृढ़ करने में सहायता करते हैं। भारतीय डायस्पोरा की शब्दावली को सामान्यतः भारतीयों के अनिवासी (एनआरआई) और भारत के प्रवासी नागरिकों (ओसीआई) के लिए समझा जाता है जो मूल देश के कार्ड धारक हैं। स्वतंत्रता के पश्चात, भारत ने विश्व भर में एक सुदृढ़ प्रवाह के साथ प्रवासियों की बड़ी संख्या दर्ज की है। भारतीय प्रवासियों को विदेश नीति के सभी विषयों में एक शक्तिशाली रूप में कार्यों को करने के संदर्भ में अहम मान्यता दी गई है। वैश्विक राजनीति के क्षेत्र में डायस्पोरा सॉफ्ट पावर की इकाई के रूप में उभरे हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, डायस्पोरा ने वैश्विक स्तर पर प्रौद्योगिकी कनेक्टिविटी में अपनी तेजी से प्रगति के पथ को प्राप्त किया है। प्रवासी नीतियों को विदेशी मामलों में अभिसरण के रूप में मान्यता दी गई है।

स्वतंत्रता के वर्ष के पश्चात, हम भारत के उस समय के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी के मार्गदर्शन में नेहरूवादी मॉडल की अपनी आदर्श परियोजना के साथ भारत की विदेश नीति में प्रवासी नीति का उल्लेखनीय अभिविन्यास देख सकते हैं, जो गुटनिरपेक्ष और साम्राज्यवाद विरोधी अवधारणाओं पर जोर देता है। भारतीय प्रवासी निरंतर अपनी मातृभूमि के साथ अपने आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने का प्रयास करते हैं। उसके पश्चात हम देख सकते है कि अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में सरकार ने विदेशी नागरिकों के वर्ग के लिए कुछ नीतिगत उपायों की शुरुआत की है जैसे कि एनआरआई फंड प्रदान करना, उनके मतदान अधिकार सुनिश्चित करना, प्रत्येक वर्ष 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाना, और प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार और कई अन्य लोगों के साथ प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार से सम्मानित करना। इसके अतिरिक्त, सरकार ने विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के युवाओं के मध्य अपनी भारतीय जड़ों, देश की संस्कृति और मूल सिद्धांतों और मूल्यों के बारे में ज्ञान बढ़ाने

के लिए भारत को जानो कार्यक्रम (केआईपी) की एक योजना भी शुरू की। डायस्पोरा की महत्ता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उन्होंने विकास के लिए संसाधनों, आर्थिक बाजारों तक पहुंचने के लिए एक महत्वपूर्ण लिंक के रूप में सेवा करने के अवसर लाकर भारतीय विकास में योगदान दिया है। डायस्पोरा भारत में व्यापार और निवेश का पर्याप्त स्रोत प्रदान करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय उद्यमिता पर जोर देते हैं। प्रवासी भारतीयों ने अपनी मूल संस्कृति, परंपराओं, भाषाओं और नैतिकता को विश्व स्तर पर भी बढ़ाया है। एक उदाहरण के लिए, आयुवेंद और जड़ी बूटियों, योग और ध्यान और धार्मिक त्योहारों के ज्ञान में वृद्धि। इसलिए, भारतीय प्रवासी देशों के मध्य सुदृढ़ मित्रता बनाने में एक पुल की तरह काम करते हैं।

वैश्विक राजनीतिक क्षेत्र में विश्व भर में भारतीय मूल के व्यक्तियों के कार्यालय की पकड़ में वृद्धि देखी गई है। स्पष्ट है कि देशों के कई भागों में भारतीय मूल के राजनेताओं ने लोकतांत्रिक राजनीति में अपनी स्थिति गढ़ ली है। लेख प्रभावशाली प्रवासियों द्वारा निभाई गई भूमिकाओं को संबोधित करेगा और उन्होंने अपनी वैश्विक पहचान कैसे विकसित की इसको भी समझने की आवश्यकता है।

एक अनुमान की गणना करने के लिए, लगभग 200 प्रतिनिधि विश्व भर में भारतीय डायस्पोरा के शक्तिशाली धारक हैं। उन प्रभावशाली नेताओं को उजागर करना महत्वपूर्ण है जो अलग–अलग देशों के नीति निर्माण में योगदान देते हैं। विश्व स्तर पर, भारतीय प्रवासियों ने एक प्रतिष्ठा बनाई है और अपने निवास देशों में गहरी जड़ें जमा ली हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय प्रवासियों ने विभिन्न देशों का भी प्रतिनिधित्व क्या है या कर रहे हैं, गुयाना के राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली, मॉरीशस के प्रधान मंत्री के रूप मं प्रविंद जगन्नाथ और हाल ही में यूनाइटेड किंगडम के प्रधान मंत्री ऋषि सुनक, पुर्तगाल के प्रधान मंत्री के रूप में एंटोनियो कोस्टा, संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति के रूप में कमला हैरिस और कई अन्य।

भारतीय प्रवासियों द्वारा निभाई गई भूमिकाओं ने भारत कोभिन्न–भिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बना दिया है। एक मजबूत समुदाय के रूप मै, उन्होंने वैश्विक अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है, जिसे वैश्विक प्रेषण के संदर्भ में मापा जाता है। दूसरे, अत्यधिक कुशल और तकनीकी रूप से संचालित डायस्पोरा ने अमेरिका, कनाडा और यूरोप जैसे उन्नत देशों में इंजीनियरिंग और प्रबंधन अध्ययन के विभागों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। तीसरा, प्रवासी भारतीय उन कंपनियों का हिस्सा बन गए हैं जो भारत में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में योगदानकर्ता हैं। वे कच्चे माल की सोर्सिंग के लिए एक पुल के रूप में कार्य करते हैं और देश में पहल को प्रेरित करते हैं। अंत में, भारतीय डायस्पोरा के प्रसार ने विश्व की धारणा को बदल दिया है और भारतीय कर्मचारियों के

मन में मेक इन इंडिया की पहल पर बल दिया है। उन्होंने कॉर्पोरेट क्षेत्रों पर पकड़ बना ली है और भारत की विकास परियोजनाओं में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि प्रवासी भारतीय ने वैश्विक देशों के साथ भारत के संबंधों को सुदृढ़ करने में बहुत योगदान दिया है।

उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है कि शक्तिशाली अमेरिकी भारतीय महिलाओं में से एक कमला हैरिस, संयुक्त राज्य अमेरिका के कार्यालय में उपराष्ट्रपति का स्थान धारण करने वाली पहली महिला हैं। वह विश्व की सबसे बेहतरीन प्रभावशाली व्यक्ति हैं, जो भारतीय प्रवासियों में शीर्ष पद पर हैं। भारतीय महिला को विश्व के सबसे पुराने लोकतंत्र क उपराष्ट्रपति के रूप में देखना हमारे लिए गर्व की बात है।

इसी प्रकार, पुर्तगाल के प्रधान मंत्री एंटोनियो कोस्टा ने पुर्तगाल की चुनावी राजनीति में अपनी स्थिति को चिन्हितकिया है। उन्होंने प्रभावी रूप से पुर्तगाल के लोगों का दिल जीत लिया है क्योंकि उन्होंने संसदीय सीटों पर पार्टी के लिए निरंतर तीन कार्यकाल के लिए लोगो से समर्थन प्राप्त किया है। एंटोनियो कोस्टा की सोशलिस्ट पार्टी ने पुर्तगाल की लोकतांत्रिक राजनीति में पूर्ण बहुमत के साथ जीत प्राप्त की है।

इसी के अनुरूप हमारे भारतीय मूल के ऋषि सुनक 2022 के चुनावों में ब्रिटन के प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त होने वाले पहले भारतीय बन गए हैं। ध्यान देने के लिए, वह सबसे कम उम्र के नेता है जो यूके में एक कार्यालय संभाले हैं। पीएम के रूप में चुने जाने से पहले, वह राज्य के लिए सांसद के रूप में चुने गए थे और वर्ष 2019 में कैबिनेट में ट्रेजरी की भूमिका के मुख्य सचिव के रूप में भी कार्य किया है।

इसलिए, भारतीय प्रवासियों की भूमिकाओं और उनके उल्लेखनीय योगदान की जांच करना प्रेरणादायक है जो भारतीय मूल के नेताओं ने अब अपने निवास देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया हैं। भारतीय प्रवासी नए अवसर की तलाश में विदेशों में गए हैं जिससे कि विश्व स्तर पर सबसे बड़ा प्रेषण प्रवाह हो सके। इसलिए, प्रवासी भारतीयों की बहुमुखी भूमिका के साथ, भारत ने सुपर पावर होने की राह अपना ली है और विदेशी विषयों में और अधिक अपनी अहम भूमिका का दर्शाया है।

निष्कर्ष

निस्संदेह, भारत डायस्पोरा अपनी मातृभूमि की अच्छाई सुनिश्चित कर रहा है। वह देशों के मध्य विश्वास बनाने के लिए अपनी कार्रवाई में सुसंगत हैं और बाजार नेटवर्क का विस्तार करने में बड़े समर्थकों के रूप में कार्य करते हैं। डायस्पोरा के बौद्धिक कौशल ने राष्ट्र की भलाई के लिए अभिनव योजनाओं, अत्यधिक उन्नत प्रौद्योगिकियों, आधुनिक व्यावसायिक विचारों को विकसित करने में योगदान दिया है। प्रवासी जनसंख्या के विस्तार के साथ, रहने वाले देशों के राजस्व में करों, गैर–करों की खपत और सार्वजनिक व्यय के रूप में वृद्धि हुई है। इसलिए, भारतीय प्रवासियों ने आक्रामक रूप से व्यापार और निवेश, मानव पूंजी, आर्थिक प्रेषण और कई अन्य के संदर्भ में भिन्न–भिन्न रूपों में अपने मूल देश का समर्थन और योगदान दिया है। परिणामस्वरूप, प्रवासी भारतीयों ने वास्तव में भारत का वैश्विक मंच पर एक महाशक्तिशाली राष्ट्र बनाने में रीढ़ की हड्डी के रूप में काम किया है।

संदर्भ–सूची

- Rastogi, A. (2021, August 6). "Indian Diaspora's rise in the global political arena". *Media India Group.*
- Mahalingam, M. "India's Diaspora Policy and Foreign Policy: An Overview". *Global Research Forum on Diaspora and Transnationalism.*
- Varma, N.S. (2020) Indian Diaspora: Analysis of its Advantages to the Home Country and to the world. *International Review of Business and Economics,* 4(1).

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007